10

केंद्रीय विद्यालय, कहलगाँव–एक केस अध्ययन

संजय कुमार सुमन*

केंद्रीय विद्यालयों की भारतीय विद्यालयी शिक्षा में अपनी असीम भूमिका है। देश के सभी प्रांतों और भागों में इसकी उपस्थिति देखी जा सकती है। देश की विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा, सुधार और विकास के मानदंड तैयार करने और उसे लागू करने में इन विद्यालयों का बहुत अधिक योगदान है। बिहार राज्य स्थित भागलपुर ज़िले के एन.टी.पी.सी., दीप्ति नगर, कहलगाँव का केंद्रीय विद्यालय भी इनमें से ही एक है जो अपने उद्देश्यों की पूर्ति में प्रयासरत है, चूँकि यह प्रोजेक्ट विद्यालय है इसलिए एन.टी.पी.सी. के साथ मिलकर इसे संचालित किया जाता है। इससे एन.टी.पी.सी. के कर्मचारियों और अधिकारियों के बच्चों को समुचित शिक्षा की सुविधा मिलने या दिए जाने की योजना को क्रियान्वित किया जाता है। इसके साथ ही बदले में एन.टी.पी.सी. द्वारा विद्यालय को भवन-परिसर समेत विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए कुछ संसाधन प्राप्त हो जाते हैं। इसीलिए दीप्ति नगर, कहलगाँव में भी विद्यालय भवन, शिक्षक आवास और अन्य आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त हैं। अनुसंधानकर्ता ने पाया कि एन.टी.पी.सी.परिसर में ही सुंदर, आकर्षक और समुचित ढंग का विद्यालय भवन स्थित है। विद्यालय के लिए उपयोगी शिक्षण उपकरण में वहाँ एन.सी.एफ.-2005 की दो प्रतियाँ, पाठ्यक्रम एवं सभी पाठ्यपुस्तकों की दो प्रतियाँ और एक पुरानी शिक्षक मार्गदर्शिका भी मौजूद थी।

कक्षा-शिक्षण सामग्री में राज्य, देश और विश्व के नक्शों समेत ग्लोब और स्वास्थ्य, सामान्य अध्ययन एवं भाषा के लिए शैक्षिक चार्टों का भी प्रयोग किया जाता है।

बच्चों की प्राथमिक कक्षाओं के लिए खेल सामग्री और खिलौने का भी उपयोग जैसे – पक्षी एवं पशु वर्ग पहेली, गुड़िया, मानव आकृतियाँ, पशु और विज्ञान वाले खिलौने समेत फुटबॉल, वॉलीबॉल, रबरबॉल, बैडमिंटन और क्रिकेट के आवश्यक उपकरण भी मौजूद थे। वहाँ एक पुस्तकालय भी था, जिसमें सामान्य अध्ययन कक्ष, विश्व और देश के महान पुरुषों की तस्वीरों से सजा हुआ हॉल भी था। पुस्तकालय की कई अलमारियों में जो पुस्तकें मिलीं उनमें भाषा और साहित्य की पुरानी पुस्तकें ज़्यादा थीं। पुस्तकालय के अनुसार अन्य भारतीय भाषाओं की हिंदी में अनूदित पुस्तकें शायद नहीं थीं। हिंदी भाषा और साहित्य या हिंदी या अँग्रेज़ी में ऑडियो

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

या वीडियो सी.डी. सामग्री भी अपर्याप्त थी। अन्य विषयों से संबंधित हिंदी की पुस्तकें थीं। हिंदी की कुछ संदर्भ पुस्तकें भी थीं, जो शिक्षकों के पढ़ने के लिए ही ज़्यादा उपयुक्त लगीं। विद्यालय प्राँगण की स्वच्छता व कक्षा-कक्षाओं की स्वच्छता ठीक थी। इसके साथ ही पेयजल की समुचित उपलब्धता व छायादार वृक्ष भी लगे हुए थे। विद्यालय सुबह 7:15 से शुरू हो जाता था।

विद्यालय के आस-पास का वातावरण ठीक था क्योंकि एन.टी.पी.सी. के अधिकारियों का निवास स्थान, बाज़ार, बैंक, डाकघर, जलपानगृह विद्यालय के आस-पास बने हुए थे और आवागमन के लिए एन.टी.पी.सी. की अपनी बस सेवाएँ भी समय पर उपलब्ध थीं, जिससे विद्यालय परिसर से बाहर कुछ गाँवों, स्टेशन और हाट बाज़ार व रिहायशी क्षेत्रों समेत अन्य महत्वपूर्ण जगहों तक आवागमन किया जा सकता था। स्वतंत्र रूप से खेल का मैदान विद्यालय प्राँगण के बीचों-बीच ही था। इसी मैदान में सुबह सामूहिक प्रार्थना, राष्ट्रगान और पी.टी.आदि का कार्यक्रम किया जाता था। स्कॉउट एंड गाइड तथा एन.सी.सी. की गतिविधियाँ भी होती थीं। मुझे स्वतंत्र रूप से खेल के मैदान होने की आवश्यकता का आभास हुआ। विद्यालय का कैलंडर था, शैक्षिक चार्ट्स भी दिखे, घंटी की सुविधा भी उपलब्ध थी। साथ ही साथ व्यायाम हेतु साधन भी पर्याप्त थे। शिक्षकों के लिए उसमें समुचित फ़र्नीचर भी था। स्टाफ़ रूम व प्रधानाध्यापक कक्ष के साथ अतिथि कक्ष भी था। शिक्षकों के अनुसार छात्रों की नियमित उपस्थिति शत-प्रतिशत थी। छात्रों के बैठने की व्यवस्था भी अच्छी थी। छात्रों के गणवेश में उपस्थिति होती थी। खेलों का अभ्यास भी ठीक-ठाक होता था। छात्रों द्वारा गृहकार्य पूरा करने तथा शिक्षकों द्वारा उसे जाँच करने का कार्य भी ठीक प्रकार से होता था इसके साथ ही शिक्षकों द्वारा श्यामपट्टों के समुचित उपयोग को भी संतोषप्रद कहा जा सकता है एवं शिक्षकों की उपस्थिति भी समय पर होती थी। विद्यालय भवन के रख-रखाव का कार्य भली-भाँति था। विद्यालय की वित्तीय स्थिति अच्छी थी। महिला शिक्षकों की संख्या अपेक्षाकृत कम दिखी। शिक्षक विद्यार्थी अनुपात भी ठीक था। विद्यालय कैलेंडर के अनुसार कार्य संचालन और छात्रों की निर्धारित समय तक विद्यालय में उपस्थिति को संतोषजनक बताया गया था। मासिक मूल्याँकन की गतिविधियाँ भी ठीक प्रकार चल रही थीं। विद्यालय पहुँचने का मार्ग ज़्यादा कठिन नहीं था। उच्चाधिकारियों द्वारा विद्यालय निरीक्षण की प्रक्रिया भी जारी दिखी। विद्यालय में छठी कक्षा में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/और अन्य पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की उपस्थिति को निम्न प्रकार बताया गया –

तालिका – 1

	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	सामान्य
छात्राएँ	10	3	6	44
छात्र	9	2	10	

तालिका – 2

अभिभावकों की शैक्षिक योग्यता और पेशा

पेशा	कृषि	मज़दूरी	व्यवसाय	नौकरी	कुल	
	4	9	14	44	71	
शैक्षणिक योग्यता	इंटरमीडिएट	ग्रेजुएट	मैट्रिक	तकनीकी डिप्लोमा	दसवीं स्तर	नहीं बताया
	21	17	13	4	3	13

कक्षा में कुल 84 विद्यार्थी थे, जिसमें 50 छात्र और 34 छात्राएँ थीं। इनमें 10 अनुसूचित जाति की छात्राएँ 9 अनुसूचित जाति के छात्र तो 2 अनुसूचित जनजाति के छात्र और 3 अनुसूचित जनजाति की छात्राएँ थीं। इसी तरह 10 छात्र अन्य पिछड़ा वर्ग और 6 छात्राएँ अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित थे। शेष 44 छात्र सामान्य वर्ग से थे। अनुसंधानकर्ता ने अध्यापन सह-अनुसंधान के तीन महीने का कार्य उस विद्यालय में 29 अक्तूबर, 2012 से 19 फरवरी, 2013 तक किया। इस दौरान सामान्य परीक्षण के साथ उन्होंने कक्षा 6 के 'अ' और 'ब' सेक्शन के विद्यार्थियों को पढ़ाने का कार्य भी किया। इन कक्षाओं को पढ़ाने के अतिरिक्त नियमित रूप में विद्यालय द्वारा नियुक्त पढ़ाने वाले शिक्षकों के अध्यापन का निरीक्षण कार्य भी किया। नियमित शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए पाठों व विषयों के निरीक्षण के दौरान यह ध्यान दिया गया कि उनके द्वारा पाठ या विषय को शुरूआत में कैसे स्पष्ट किया गया? आदि। परिणामस्वरूप यह बात उभर कर आई कि शिक्षकों ने परिचयात्मक प्रश्न विधि विद्यार्थियों के अनुभवों के साथ साझीदारी का उपयोग विधि और बातचीत से पाठ की शुरूआत की और व्याख्यान, गतिविधि आधारित ब्लैक-बोर्ड और चॉक, चार्ट्स, पुस्तक, शब्दों आदि से पाठ को आगे बढ़ाया तथा संक्षिप्त निर्देश व विद्यार्थियों को कुछ पूछने व कहने के अनुदेश के साथ संक्षिप्त में सब कुछ समावेशित कर, विद्यार्थियों के लिए योजना की ओर इशारा करके गद्य या पद्य को समझ के साथ कैसे पढ़ें एवं साझेदारी के साथ सवाल-जवाब के लिए कैसे लिखें-पढ़ें, सुनें-बोलें के निर्देश के साथ समापन कर विद्यार्थियों के उद्देश्य को पूरा किया। इस दौरान अनुसंधानकर्त्ता ने भी विद्यालय कैलेंडर के अनुसार जो प्रस्तावित पाठ्यपुस्तक *वसंत भाग (छह)* के पाठ थे उसे विद्यार्थियों को पढ़ाया। पढ़ाने के दौरान गतिविधि आधारित शिक्षण का भी सहारा लिया गया। इसके तहत पूरी कक्षा को कुछ समूहों में बाँटना, प्रत्येक समूह को पाठ से संबंधित पढ़ने-लिखने, सुनने-समझने, बोलने और समझाने के साथ ही समूह कार्य करके प्रस्तुत करने वाले कार्यों को भी करवाया गया। कभी-कभी विद्यार्थियों को शिक्षक की भूमिका निभाने की ज़िम्मेदारी भी दी गई। कभी-कभी वर्ग में अपनी इच्छा से पाठ के बाहर के संदर्भों पर चर्चा और बातचीत की गई। साहित्यिक समझ के विकास के उद्देश्य से विद्यार्थियों को प्रेरित किया गया। इसमें गीत-संगीत, चुटकुले-मुहावरे, दूरदर्शन, सिनेमा, नाटक-नौटंकी, सामूहिक उत्सव, प्रदर्शनी, लोकगीत, लोकनृत्य व क्षेत्रीय बोलियों का प्रयोग और उपयोग भी किया गया।

व्यावहारिक व्याकरणों पर ज़ोर देने के लिए व्याकरण के खेल के लिए वर्ग पहेलियाँ, क्विज़, अंत्याक्षरी, सही-गलत, मिलान और रिक्त स्थानों को पूरा करने समेत अधूरे वाक्यों/संदर्भों/कहानियों/कविताओं को पूरा करने का स्वाभाविक और स्वतंत्र अभियान को बढ़ावा देने का प्रयोग वर्गाध्यापन में किया गया। गृहकार्य में घर-परिवार, पड़ोस और उपलब्ध व्यक्तियों और संसाधनों से मिलने, बात करने, साक्षात्कार लेने, नमूने संग्रह करने और समूह व एकल प्रदर्शन करने के प्रयोग को भी बढ़ावा दिया गया।

बच्चों की समझ की जानकारी और आकलन के लिए प्रश्नोत्तर और बातचीत के माध्यम से एकल और सामूहिक लेखन-पठन, वर्णन-विश्लेषण, स्पष्टीकरण और प्रस्तुतीकरण के अंशों का संग्रह तथा मूल्यांकन कार्य भी किया गया।

वर्ग के भीतर लेखन और सहज तथा मित्रवत् मूल्यांकन के सहारे उनके वैयक्तिक और सामूहिक अध्ययन की त्रुटियों की खोज की गई। इसे पुन: वर्ग के भीतर पढ़ाई के दौरान ही खत्म करने और करवाने का अभियान चलाया गया। इससे सभी बच्चों पर ध्यान देने और सबके अध्ययन की दिशा को आगे की ओर बढ़ाने में सफलता मिली। कुछ बच्चे जो प्रश्न नहीं पूछना चाहते थे, वे भी प्रश्न पूछने के अभियान में शामिल हुए। कुछ जो बिल्कुल बोलने से कतराते या घबराते थे उनकी बोलने में सक्रियता बढ़ी। कुछ जो केवल देखकर लिखना अच्छा समझते थे वे स्वतंत्र होकर लिखने में सक्रिय होने लगे। कुछ अपनी गलती, अशुद्धता और दूसरों के मज़ाक उड़ाने के भय और झिझक से जो वर्ग में शांत होकर बैठे रहते थे तथा बहुत कम लिखते थे, वे भी वर्ग में भूमिका निभाने में सक्रिय होने लगे। पुस्तक के अभ्यास प्रश्न को स्वयं से समझकर लिखने की समझ के लिए अध्ययनकर्ता ने वर्ग में ही स्वतंत्र ढंग से सबको लिखने और सबके लिखे हुए पर सामूहिक चर्चा कर उसमें जोड़-घटा सुधार कर उसे सबके सामने प्रस्तुत करने का कार्य किया, इससे सबके स्वयं से लिखने के आत्मबल को बढ़ावा मिला और उन्होंने स्वयं ही प्रश्नों का उत्तर लिखना शुरू किया। इस बीच अध्ययनकर्ता ने सभी के द्वारा कुछ न कुछ गलत किए प्रयोगों को चिह्नित कर उसे उनके सहयोग से खेल और हँसी-मज़ाक वाले लहजे में सुधार कर प्रस्तुत किया तो सभी बच्चों को लगा कि गलतियाँ तो सबसे होती ही हैं और तभी वर्ग में जो विद्यार्थी गलती हो जाने की संभावना की वजह से ही शांत व सुस्त होते थे, उनको सक्रिय और सचेत करने में सहूलियत मिली। इसमें कभी-कभी शोर-गुल बढ़ जाने, बगल की कक्षाओं पर दुष्प्रभाव पड़ने, वर्ग के अनुशासन भंग होने और विद्यार्थियों में आपसी छीना-छपटी और हँगामा होने का भय और खतरा हमेशा बना रहता था, जिसे केवल सहृदयता और अन्य शिक्षकों की सहायता से ही दूर किया जाना संभव होता था। प्रधान शिक्षकों के साथ स्कूल के सभी शिक्षकों के सामूहिक दायित्व से ही पूरे विद्यालय को अनुशासित और सफल ढंग से संचालित किया जा सकता था।

भाषा के शिक्षकों पर ही वर्ग में सभी विषयों के भाषा को लिखने-पढ़ने और समझने-समझाने की जवाबदेही नहीं होती, बल्कि सभी शिक्षकों को सामूहिक रूप से एक-दूसरे की ज़िम्मेदारी में

सहायता करके अपने निजी विषय की ज़िम्मेवारी को सफल ढंग से निभाया जा सकता है। इसीलिए अनुसंधानकर्ता ने भाषा से अन्य विषयों और अन्य भाषाओं के मेल-जोल को भी बढ़ावा देने का कार्य किया, जिसका परिणाम काफ़ी अच्छा दिखाई दिया। विद्यार्थी ज़्यादा सक्रिय, सहज और सुखद होकर पढ़ाई में रुचि लेने लगे।

तीन माह का समय तो कम था मगर विद्यालयी कैलेंडर की योजना अनुसार उनको हिंदी की पाठ्यपुस्तक पढ़ाने और उसके मूल्यांकन द्वारा उनके भाषिक अध्ययन की गति को जानने-बूझने के लिए कुछ कम भी नहीं था। अध्ययनकर्ता ने पाया कि उनके पढ़ाने से सभी में पढ़ने-लिखने और सुनने-समझने में सुधार और विकास की गति ज़रूर तेज़ हुई थी। यह अध्ययनकर्ता ने निजी तौर पर अनुभव किया और साक्ष्य के आधार पर उनको स्वयं देखा। इसीलिए उनके अध्ययन को अपने अध्ययन का लक्ष्य बनाकर अध्ययनकर्ता ने एक लघु शोध के आँकड़े इकट्ठे किए। उसके लिए उन्होंने उसी कक्षा के 72 अभिभावकों, स्वयं 82 विद्यार्थियों और उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षकों की प्रतिक्रिया को जानने के लिए उनसे बातचीत और साक्षात्कार लिए। प्रश्नावली जैसे संयंत्रों का शोध निर्माण कर उसके द्वारा आँकड़े संग्रह किए गए। जिस आधार पर बिहार जैसे हिंदी भाषी राज्य में किसी प्रोजेक्ट स्कूल के कक्षा 6 की हिंदी शिक्षण की स्थिति को जानने की कोशिश की गई। प्रश्नावली, सूचीपत्र, निरीक्षण प्रपत्र, साक्षात्कार और बातचीत से जो सामने आया वह इस प्रकार है –

82 विद्यार्थियों के 71 अभिभावकों में 4 कृषि, 9 मज़दूरी, 14 व्यवसाय और 44 नौकरीपेशा से जुड़े हुए थे। इनमें से 21 इंटरमीडिएट, 17 ग्रेजुएट, 13 मैट्रिक, 4 तकनीकी डिप्लोमा और 3 दसवीं स्तर तक शिक्षित थे। इनमें से 13 ने नहीं बताया कि वे कितने शिक्षित थे या पूर्णत: अशिक्षित थे। 28 अभिभावकों ने विद्यालय के समय को ठीक नहीं बताया और इस संबंध में दो ने कुछ जवाब नहीं दिया। 15 ने कहा कि वे अभिभावक शिक्षक संघ की बैठक में भाग नहीं लेते हैं। इस संबंध में 1 (एक) ने कुछ भी कहने से इंकार किया। 21 ने अपने बच्चों की पढ़ाई के खर्च उठाने में असमर्थता बतायी। इस संबंध में भी 1 ने कुछ नहीं बताया। 25 ने विद्यालय जाकर अपने बच्चों की पढ़ाई की जानकारी नहीं लेने की बात स्वीकारी। इसमें भी 1 ने कुछ नहीं बताया। 44 ने सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी से अनभिज्ञता ज़ाहिर की। इस संबंध में 2 ने कुछ नहीं बताया। विद्यालय में शिक्षकों के समय पर आने के बारे में केवल दो ने ही 'हाँ' और 'नहीं' दोनों में से कुछ नहीं बताया। शेष 69 ने 'हाँ' में उत्तर दिया। बच्चों को विद्यालय में सारी सुविधाएँ मिलने के सवाल के जवाब में 6 ने 'ना' में 3 ने 'हाँ' और 'ना' में से किसी में भी नहीं और शेष 62 ने 'हाँ' में उत्तर दिया। घर के काम के कारण बच्चों के रोज विद्यालय नहीं जा पाने के सवाल पर 3 ने हाँ 1 ने 'हाँ' और 'ना' में से कुछ भी नहीं और शेष 67 ने 'नहीं' कहा। बच्चों के समय पर विद्यालय जाने के सवाल पर 1 ने 'नहीं' कहा। अपने बच्चों से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछताछ करने के सवाल पर भी 1 अभिभावक ने 'नहीं' कहा। इनमें अधिकांश अभिभावकों ने

बच्चे को रोज़ विद्यालय भेजने के सवाल पर 'हाँ' कहा। शिक्षकों का बच्चे के प्रति व्यवहार अच्छा होने के सवाल पर भी अधिकांश ने 'हाँ' कहा। कुल मिलाकर कक्षा 6 के इन विद्यालयों में अधिकांशत: एन.टी.पी.सी. में कार्यरत सरकारी नौकरी करने वाले अभिभावक के बच्चे थे। इनके साथ ही उस विद्यालय में सात या आठ किलोमीटर की दूरी पर निवास करने वाले ग्रामीणों के बच्चे भी इसमें दाखिला प्राप्त करने वाले थे, इसलिए कृषि, मज़दूरी और व्यवसाय से जुड़े हुए 30 अभिभावक भी आँकड़ों में शामिल हो गए हैं। एम.ए. और बी.एड. किए हुए मात्र 3 अभिभावक शामिल हैं, जबकि मैट्रिक से कम और मैट्रिक तथा आई.ए. तक शिक्षा प्राप्त करने वाले अभिभावकों की संख्या 50 के आसपास है। इससे ज़ाहिर होता है कि निम्न मध्यवर्गीय और अल्पशिक्षित परिवार वाले बच्चों की संख्या ही ज़्यादा थी।

82 विद्यार्थियों को उनके पढ़ने- लिखने और समझकर जवाब देने के कौशल की जाँच के लिए उन्हें जो प्रश्नावली दी गई थी, उसमें 16 प्रश्न थे जिसके लिए हाँ या नहीं पर (√) का निशान लगाना था तथा उसमें छात्र का नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम और विद्यालय का पता लिखना था जिसके लिए उसके सामने जगह छोड़ी गई थी और जानबूझकर विद्यालय का पता नीचे भी लिख दिया गया था, ताकि विद्यार्थियों की सजगता, लिखावट, शुद्धता और प्रतिक्रिया की जाँच की जा सके। इसमें से बहुत सारे बच्चों ने विद्यालय, एन.टी.पी.सी., दीप्ति नगर, अपना स्वंय नाम और केंद्रीय आदि लिखने में गलती की। अधिकांश ने कौमा (,) के प्रयोग में गलती की। उदाहरण के लिए 11 विद्यार्थियों ने विद्यालय सही से नहीं लिखा। दो ने एन.टी.पी.सी. लिखने में गलती की। 15 ने 'दीप्ति नगर' लिखने में गलती की और

तालिका – 3

क्र सं	प्रश्न	प्रत्युत्तर		
1	क्या आप अपने बच्चे को रोज़ विद्यालय भेजते हैं?	71 हाँ	नहीं	
2	क्या आपका बच्चा समय पर विद्यालय जाता है?	हाँ	नहीं 1	
3	क्या आपकी राय में विद्यालय का समय ठीक है?	हाँ	नहीं 28	जवाब नहीं 2
4	क्या शिक्षकों का व्यवहार बच्चों के प्रति ठीक है?	71 हाँ	नहीं	
5	क्या विद्यालय में शिक्षक समय पर आते हैं?	69 हाँ	नहीं	जवाब नहीं 2
6	क्या आप अभिभावक शिक्षक संघ की बैठक में भाग लेते हैं?	हाँ	नहीं 15	जवाब नहीं 1
7	क्या आप अपने बच्चे से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछताछ करते हैं?	हाँ	नहीं 1	
8	क्या आप विद्यालय जाकर बच्चों की पढ़ाई की जानकारी लेते हैं?	हाँ	नहीं 25	जवाब नहीं 1

9	क्या आपके बच्चों को विद्यालय में सारी सुविधाएँ मिलती हैं?	62 हाँ	नहीं 6	जवाब नहीं 3
10	क्या घर के काम के कारण बच्चा रोज़ विद्यालय नहीं जा पाता है?	3 हाँ	नहीं 67	जवाब नहीं 1
11	क्या आपको पढ़ाई का खर्च उठाने में कठिनाई आती है?	21 हाँ	नहीं	जवाब नहीं 1
12	क्या सरकार द्वारा बच्चों को पढ़ने हेतु दी जा रही सुविधाओं की आपको जानकारी है?	हाँ	नहीं 44	जवाब नहीं 2

14 विद्यार्थियों ने केंद्रीय ठीक से नहीं लिखा। बच्चों ने स्वयं अपना नाम लिखने में गलती की जैसे गुप्ता, पियुश, श्वेता आदि लिखने में गलती की। 15 बच्चों ने हिंदी में अपना नाम, विद्यालय का नाम व पता लिखने में झिझक ज़ाहिर की और उन्होंने हिंदी में न लिखकर अंग्रेज़ी में लिखा। 26 विद्यार्थियों ने सभी प्रश्नों के हाँ या नहीं पर (√) निशान लगाने में संशय ज़ाहिर किया। इसमें मेरे घर से विद्यालय बहुत दूर है को बताने में 4 विद्यार्थियों ने हाँ या नहीं में से किसी में कुछ निशान नहीं लगाए। घर से विद्यालय आते समय रास्ते में कई परेशानियाँ आती हैं की प्रतिक्रिया में भी पाँच ने कुछ नहीं बताया। एक ने कहा, मुझे विद्यालय का समय बहुत अच्छा नहीं लगता है। एक ने कहा मुझे मेरे शिक्षक अच्छे नहीं लगते। दस विद्यार्थियों ने हाँ या नहीं में से कुछ भी नहीं बताया कि उनके शिक्षक पढ़ाते समय गीत व कहानी भी सुनाते हैं। इसी तरह दो ने मेरे शिक्षक पढ़ाते समय रोचक बातें, हास्य व्यंग्य और संदर्भों का प्रयोग करते हैं के जवाब में भी कुछ नहीं बताया। एक ने मुझे शिक्षकों से प्रश्न पूछने में डर लगता है के जवाब में भी कुछ नहीं बताया। मेरे शिक्षक कभी-कभी पढ़ाई के बारे में मेरे पिता से बात करने घर जाते हैं के जवाब में भी 5 विद्यार्थियों ने हाँ या नहीं में कुछ नहीं कहा। 9 विद्यार्थियों ने हमारी हर महीने मासिक परीक्षा होती है के सवाल पर कुछ नहीं कहा। एक ने हम कक्षा में समूह कार्य भी करते हैं के जवाब में कुछ नहीं कहा। कुल मिलाकर अगर देखें तो सभी सोलहों सवालों के जवाब में अधिकांश बच्चों ने सकारात्मक और समुचित जवाब दिए–

तालिका – 4

क्र सं	प्रश्न	प्रत्युत्तर		
1	मेरे घर से विद्यालय बहुत दूर है।	हाँ	नहीं	जवाब नहीं 4
2	घर से विद्यालय आते समय रास्ते में कई परेशानियाँ आती हैं।	हाँ	नहीं	जवाब नहीं 5
3	मेरे विद्यालय में पीने के पानी की समुचित व्यवस्था है।	हाँ (सभी)	नहीं	

4	मेरे विद्यालय में शौचालय की समुचित व्यवस्था है।	हाँ (सभी)	नहीं	
5	मेरे विद्यालय का समय बहुत अच्छा है।	हाँ	नहीं	
6	मुझे मेरे शिक्षक अच्छे लगते हैं।	हाँ	नहीं	
7	शिक्षकों द्वारा समझाई गई बातें हमारी समझ में आती हैं।	हाँ (सभी)	नहीं	
8	मेरे शिक्षक पढ़ाते समय गीत व कहानी भी सुनाते हैं।	हाँ (अधिकतर)	नहीं	जवाब नहीं 10
9	मेरे शिक्षक पढ़ाते समय रोचक बातें, हास्य-व्यंग्य और संदर्भों का प्रयोग करते हैं।	हाँ (अधिकतर)	नहीं	जवाब नहीं 2
10	हमारे शिक्षक पढ़ाने के बाद हमसे प्रश्न पूछते हैं।	हाँ (सभी)	नहीं	
11	मुझे शिक्षकों से प्रश्न पूछने में डर लगता हैं।	हाँ	नहीं (सभी)	जवाब नहीं 1
12	मेरे शिक्षक कभी-कभी पढ़ाई के बारे में मेरे पिता से बात करने घर आते हैं।	हाँ (अधिकतर)	नहीं	जवाब नहीं 5
13	हमारी हर महीने मासिक परीक्षा होती है।	हाँ (अधिकतर)	नहीं	जवाब नहीं 9
14	मुझे विद्यालय जाना बहुत अच्छा लगता है।	हाँ (सभी)	नहीं	
15	हम लोग कक्षा में समूह कार्य भी करते हैं।	हाँ (अधिकतर)	नहीं	जवाब नहीं 1
16	विद्यालय में हम लोगों के लिए समय-समय पर हिंदी के लिए भाषण, लेखन, क्वीज़ और वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।	हाँ (सभी)	नहीं	

शिक्षकों से प्राप्त लिखित प्रतिक्रियाओं में विद्यालय में शिक्षण सहायक सामग्रियों की पर्याप्तता व उसके उपयोग पर तीनों ने हाँ में ज़वाब दिया। उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में दोष के लिए सी.सी.ए. को एक कारण बताया गया। शिक्षण को व्यवस्थित रूप से संचालित करने में होने वाली कठिनाइयों के लिए बच्चों के हिंदी में कम से कम रुचि लेने की ओर इशारा किया गया। विद्यालय में कोई समस्या नहीं होने की बात बताई गई। पाठ्यपुस्तक और पाठों से भी संतुष्टि के लिए हामी भरी गई। इनको

पढ़ाने में होने वाली कठिनाइयों के बारे में बच्चों के मन में हिंदी के प्रति नकारात्मक सोच को जवाब देह बताया गया। सभी शिक्षकों ने बताया कि वर्ग के भीतर पढ़ाने में विद्यार्थियों को अधिक प्रश्न करने देने की वे स्वतंत्रता देते हैं। वे गतिविधियाँ, खेलकूद और व्यावहारिक अध्यापन पद्धति का प्रभाव भी पढ़ाने में करते हैं। भाषा शिक्षण में हो रहे बदलाव की खबर भी विभिन्न माध्यमों से वे अपने पास रखते हैं। कक्षा छ: के विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ाने में आपको क्या असुविधाएँ होती हैं के सवाल के जवाब में बताया गया कि हिंदी के सापेक्ष ज्ञान के अभाव से असुविधा होती है। यहाँ ध्यातव्य है कि प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाला शिक्षक संस्कृत का है, जिसे हिंदी पढ़ाने की ज़िम्मेदारी दे दी गई थी। विद्यार्थियों में भाषिक समृद्धि के लिए उनका निजी सुझाव पूछने पर बताया गया कि प्राथमिक स्तर से ही सुधार की ज़रूरत है। संस्था में अच्छे कार्य का प्रतिफल नहीं मिलने की बात भी सामने आई, वे पदोन्नति के अवसरों से भी संतुष्ट नहीं दिखे। वर्तमान सेवा संबंधी नियमों से भी असंतुष्टि ज़ाहिर की गई।

अनुसंधानकर्ता ने तीन महीने के दरम्यान उन विद्यार्थियों को पढ़ाया और पढ़ाने के दौरान लिखने-बोलने, सुनने-पढ़ने, समझने-समझाने और अभिव्यक्ति को स्वतंत्र रूप में प्रस्तुत करने के लिए अनवरत अभ्यास, जाँच और सुधार कार्य किए, जिसके परिणामस्वरूप उनके पढ़ने, बोलने-सुनने, समझने और मौखिक अभिव्यक्ति का स्तर लगातार बढ़ता दिखा मगर सही ढंग से लिखने की गति कुछ कमज़ोर रही। कुल मिलाकर हिंदी भाषा-भाषी राज्य स्थित केंद्रीय विद्यालय के कक्षा 6 के स्तर पर हिंदी शिक्षण की स्थिति को ठीक ही कहा जा सकता है। हाँ इसमें जो कुछ त्रुटियाँ दर्शायी गई हैं, उसे अनवरत अभ्यास और समुचित प्रयास से हल किया जा सकता है। इसके लिए न केवल शिक्षक और विद्यालय बल्कि स्वयं सीखने वाले विद्यार्थी तथा उनके माता-पिता और संबंधियों को हिंदी लिखने पढ़ने की अभिरुचि को सही और सुखद बनाने की आवश्यकता है।

❑❑❑

परख

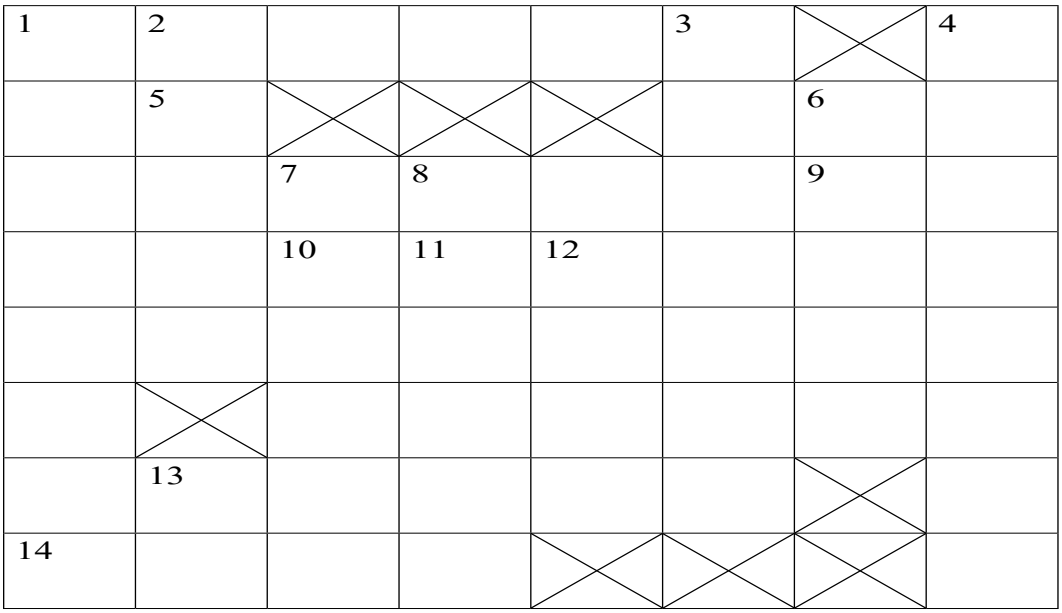

संकेत

ऊपर से नीचे

1. गुजरात के प्रसिद्ध शिक्षाविद
3. 2009 में पारित नि:शुल्क और अनिवार्य----------अधिनियम
4. सर्व शिक्षा अभियान का नारा
5. सभी शिक्षा नीतियाँ इस भाषा में शिक्षा देने की संस्तुति करती हैं।
7. गुजरात के प्रसिद्ध शिक्षाविद की पुस्तक का नाम
9. भारत में साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार
11. मोंटेसरी पद्धति की जनक का पूरा नाम
12. 1986 में बना प्रमुख शिक्षा आयोग

दाएँ से बाएँ

2. गांधी जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति
6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा को पारित करने वाली समिति
8. हिंदी की भक्तिकाल की एक कवियित्री
10. स्त्री का पर्यायवाची शब्द
13. देश की पहली शिक्षा नीति इस वर्ष बनी (अंकों में)
14. रवींद्र नाथ ठाकुर की प्रसिद्ध पुस्तक